कथा सरिता

'मैं' जाएगा तो स्वर्ग आएगा

शास्त्रों के प्रसिद्ध ज्ञानी एवं प्रख्यात संत माधवाचार्य के एक शिष्य का नाम कनकदास था। किसी ने उनसे पूछा -''क्यों कनकदास! क्या मैं स्वर्ग जाऊंगा?'' कनकदास ने उत्तर दिया -'जब मैं जाएगा, तब ही तो तू जाएगा।' सुनने वाले को लगा कि कनकदास को अभिमान हो गया है। उसने इस बात की शिकायत माधवाचार्य से की।

माधवाचार्य कनकदास को अच्छे से जानते थे। उन्हें पता था कि न केवल कनकदास निरहंकारी है, वरन वो अल्प शब्दों में गंभीर ज्ञान प्रदान करने वाले व्यक्ति हैं। उन्होने कनकदास को बुलाकर इस घटना के बारे में पूछा, तो कनकदास ने सिर हिलाकर उसकी सत्यता की पुष्टि की। बाकी शिष्यों में कानाफूसी प्रारंभ हो गई। तब माधवाचार्य ने हलके से हँसकर कनकदास से पूछा -''अच्छा, ये बताओ कनकदास! क्या तुम स्वर्ग जाओगे?'' कनकदास बोले -''गुरूदेव! जब मैं जाएगा, तभी तो मैं जा पाऊँगा।'' माधवाचार्य बाकी शिष्यों को समझाते हुए बोले -''कनकदास का भाव यह है कि जब मैं अर्थात अहंकार जाएगा, तभी तो हम स्वर्ग के अधिकारी बन पाएँगे।'' जरा भी पद का या विशेषता का अभिमान है तो पतन निश्चित है।

मातृभक्ति

एक समय हजरत मूसा को अहंकार हो गया था। एक दिन उन्होने खुदा से पूछा -'परवरदिगार! जन्नत में मेरे पास कौन महापुरूष होगा? खुदा ने कहा -मूसा! तेरे पड़ोस में एक बढ़ई रहता है। वही जन्नत में भी तेरा पड़ोसी होगा। मूसा हैरान हो गए। टूटी-फूटी झोपड़ी में रहने वाले इस बढ़ई को खुदा को याद करते हुए कभी नहीं देखा। वह तो पेड़ के नीचे बैठकर दिन भर काम करता रहता है। वह मेरी बराबरी में कैसे बैठेगा? मूसा परेशान हो गए। फिर उन्होने बढ़ई से मिलने की ठानी। मूसा जब बढ़ई से मिलने पहुंचे तो वह घर जाने की तैयारी में था। मूसा को देखते ही वह बोला -'पैगम्बर साहब! मैं आपकी सेवा में थोड़ी देर में हाजिर होता हूँ। इसके लिए मुझे माफ कीजिएगा।' यह कहते हुए वह अपनी झोपड़ी में चला गया और काफी देर वापिस नहीं लौटा। बढ़ई को ज्यादा देर लगते देख मूसा ने उसकी झोपड़ी के दरवाजे में से देखा कि वह क्या कर रहा है? वह देखकर हैरान रह गए। बढ़ई अपनी बूढ़ी मां को रूई के फाहे से दूध पिला रहा था। हड्डियों का ढांचा रह गई मां लेटी हुई थी और अपने पुत्र को वात्सल्य भाव से देख रही थी। दूध पिलाने के बाद वह मां को अच्छी तरह चादर ओढ़ाकर उसके पैर दबाने लगा। तब मां ने उसे आशीर्वाद देते हुए कहा -'बेटा! मेरी दुआ है कि खुदा तुझे खूब सुख दे और जन्नत में तुझे हजरत मूसा जैसा स्थान मिले।' वृद्धा की बात सुनकर हजरत मूसा को खुदा के वचन याद आ गए। वे झोपड़ी में गए। बढ़ई ने उनसे देरी के लिए माफी मांगी, तो वे उसे गले लगाकर बोले -'भाई! तेरी बंदगी महान है। खुदा जिससे खुश हो, उस राह का पता तुझे मालूम है।' वस्तुत: माता-पिता की सेवा हजारों धर्म-कर्म से बढ़कर पुण्य का सृजन करती है।

मौन - शिक्षा

बुद्ध से मिलने एक घुमक्कड़ साधु आया। बुद्ध से आकर कहा, भगवन मेरे पास न बुद्धि है, न चातुर्य, न शब्द, न कुशलता है। अत: मैं कोई प्रश्न अथवा जिज्ञासा कर सकने की स्थिति में भी नहीं हूँ। यदि मुझे पात्र समझें तो मेरे योग्य जो कुछ भी कह सकें कह दें। घड़ी भर के लिए बुद्ध मौन हो गये। साधु भी शांत बैठा रहा। कौतुहलवश सभी भिक्षु उन्हें निहारते रहे। अचानक देखा कि साधु की आँखों से आँसुओं की धारा बहने लगी उसने महात्मा बुद्ध को साष्टांग प्रणाम किया और धन्यवाद देते हुए बोला -बड़ी कृपा की भगवन! आज मैं धन्य हो गया और नाचता-गाता, गुनगुनाता चला गया। हतप्रभ शिष्य मण्डली देखती रह गई। बुद्ध ने उससे एक शब्द भी नहीं बोला, फिर आखिर उस साधु के अंदर उस घड़ी क्या घट गया! जो उसने परम आनंद की स्थिति का अनुभव कर लिया।

बुद्ध ने मौन तोड़ते हुए कहा -आनंद उसे इशारे भर की जरूरत थी और वह मेरे मन ने कही और उसके मन ने ग्रहण कर ली। वह स्वच्छ व दिव्य आत्मा थी इसलिए उसके पवित्र निर्मल मन ने धारण कर लिया।

संत का धैर्य

महाराष्ट्र में एकनाथ नाम के विख्यात संत हुए हैं। उनका आचरण स्नेह और उदारता से भरा होता था। एक बार उनके विरोधियों ने तय किया कि किसी भी तरह एकनाथ को गुस्सा दिलाया जाए। इसके लिए एक आदमी को चुना गया। उसने पहले तो इनकार किया, किंतु पैसों का लालच देने पर वह मान गया। अगले दिन जब संत एकनाथ पूजा कर रहे थे, तो वह आदमी उनके घर में घुस गया और बिना कुछ बोले उनकी गोद में जाकर बैठ गया। एकनाथ ने विचलित हुए बिना कहा -'वाह! तुम्हारे इस प्रेम से मुझे बड़ा सुख मिला है।' थोड़ी देर बाद वह आदमी उठकर एक ओर बैठ गया। जब एकनाथ की पत्नी ने संत के लिए भोजन की थाली लगाई, तो एक थाली उस आदमी के लिए भी परोसी। जैसे ही एकनाथ की पत्नी थाली लेकर उस आदमी के पास आई, वह उनकी पीठ पर सवार हो गया। यह देखकर एकनाथ ने पत्नी से कहा -'देखना, कहीं यह भाई तुम्हारी पीठ से गिर न जाए।' पत्नी भी उतने ही स्नेह से बोली -'आप चिंता न करें। मुझे अपने बेटे को पीठ पर लादे रहने से इसका बड़ा अभ्यास हो गया है।' दोनों पति-पत्नी की इस सहृदयता और धैर्य को देखकर वह आदमी अत्यंत लज्जित हुआ और एकनाथ के चरणों में गिरकर बोला -'महाराज! आप मुझे क्षमा कीजिए। मुझ से आपके विरोधियों ने कहा था कि यदि तुम एकनाथ को गुस्सा दिला दोंगे, तो हम तुम्हें सौ रूपए देंगे। मैंने पैसों के लोभ में आकर ऐसा किया।' तब एकनाथ ने उसे गले लगाते हुए कहा -'भाई! इस बात को भूल जाओ। आओ, हम साथ भोजन करें।'

सार यह है कि बुराई का प्रतिकार अच्छाई से ही संभव है। यदि दुष्टता का जवाब स्नेह और सहनशीलता से दिया जाए, तो दुष्ट का भी हृदय परिवर्तन हो जाता है।

चवन्नी

किसी मोहल्ले में एक लड़का रहता था, उसके दोस्त हमेशा उसका मजाक उड़ाते थे। वे उसे चवन्नी और एक रूपये का नोट दिखाकर पूछते थे कि 'इनमें से तुम्हें क्या चाहिए?' वह लड़का हमेशा चवन्नी चुनता था इसलिए उसके दोस्त उसे बुद्धू समझते थे। सभी लड़के उसका मजाक उड़ाते थे क्योंकि वह एक रूपये का नोट छोड़कर हमेशा चवन्नी लेता था। अब वे हर दिन किसी नये मित्र को अपने साथ लेकर आते और कहते कि 'हमारे यहाँ एक ऐसा बुद्धू लड़का रहता है, जिससे हम पूछते हैं कि एक रूपया चाहिए या चवन्नी तो वह हमेशा चवन्नी ही चुनता है।' फिर वे उसी प्रयोग को दोहराते।

एक दिन किसी ने उस बुद्धू लड़के से पूछा, 'जब सामने वाला तुम्हें एक रूपया दिखाता है और साथ में एक चवन्नी भी होती है तो तुम हमेशा चवन्नी ही क्यों चुनते हो? क्या तुम्हें पता नहीं कि चवन्नी से बड़ा एक रूपया है? तब उस बुद्धू लड़के ने जवाब दिया, 'मुझे मालूम है मगर मैं एक रूपये का नोट ले लूँगा तो उसके बाद ये लोग यह खेल खेलना बंद कर देंगे, फिर मुझे जो रोज चवन्नी मिल रही थी, वह नहीं मिलेगी। आज मेरे पास हर दिन मिलने वाली चवन्नी से जो कई रूपये जमा हो गये हैं, वे नहीं होते।' इसे कहते हैं, छोटे लाभ मगर बड़ी हानि। आप जानते हैं कि वह लड़का अपने आपमें किस तरह की आदत डाल रहा था। उस आदत से जीवन में अस्थायी लाभ तो हो जाते हैं मगर बाद में इंसान को उसकी बड़ी कीमत चुकानी पड़ती है। जैसे एक इंसान कहीं जा रहा था और उसे रास्ते में चवन्नी मिल गयी। उस दिन के बाद उस इंसान को नीचे देखकर ही चलने की आदत पड़ गयी। उसे हमेशा लगता शायद फिर से चवन्नी मिल जाये। उस दिन के बाद उसने कभी आसमान की तरफ नहीं देखा। केवल कुछ चवन्नियों की वजह से उसने आसमान खो दिया। आध्यात्मिक पथ पर चलने वाले राही को भी यह ध्यान रखना चाहिए कि महान प्राप्ति का लक्ष्य लेकर चलते-चलते कहीं वह भी चवन्नी जैसी स्थूल प्राप्तियों में तो उलझ कर नहीं रह गया है। मान-शान, वैभव व स्थूल धन के पीछे परमात्म-प्राप्तियों को न खो दें।

बरेली। उत्तराखण्ड के मुख्यमंत्री विजय बहुगुणा को ईश्वरीय सौगात भेंट करते हुए ब्र.कु.सरोज। साथ हैं ब्र.कु.तिलक।

दिल्ली (पालमविहार)। 77 वीं शिवजयंति के पर्व पर आयोजित कार्यक्रम में पुलिस कमिश्नर आलोक मित्तल, ब्र.कु.उर्मिल तथा अन्य।

डूंगरपुर। 77 वीं शिवजयंति कार्यक्रम का उद्घाटन करते हुए जिला प्रमुख भगवती लाल, प्रियकांत पण्डया, गजेन्द्र सिंह, ब्र.कु.विजयलक्ष्मी।

कटक। प्रशासक वर्ग सम्मेलन के सम्मेलन में उड़ीसा सरकार के मुख्य सचिव टी.रामचन्द्रन, आईपीएस अनुप पटनायक, ब्र.कु.आशा, ब्र.कु.हरीश व अन्य।

फर्रूखाबाद। शिव ध्वजारोहण के पश्चात श्रम संविदा बोर्ड के अध्यक्ष सतीश दीक्षित, डॉ.अनारसिंह यादव, ब्र.कु.मंजु, प्रभु स्मृति में खड़े हैं।

गया। तिब्बतियन तन्जैन जी तथा अन्य तिब्बती भाईयों को आध्यात्मिक ज्ञान देने के पश्चात ब्र.कु.बिन्नी, ब्र.कु.सुनिता तथा अन्य।